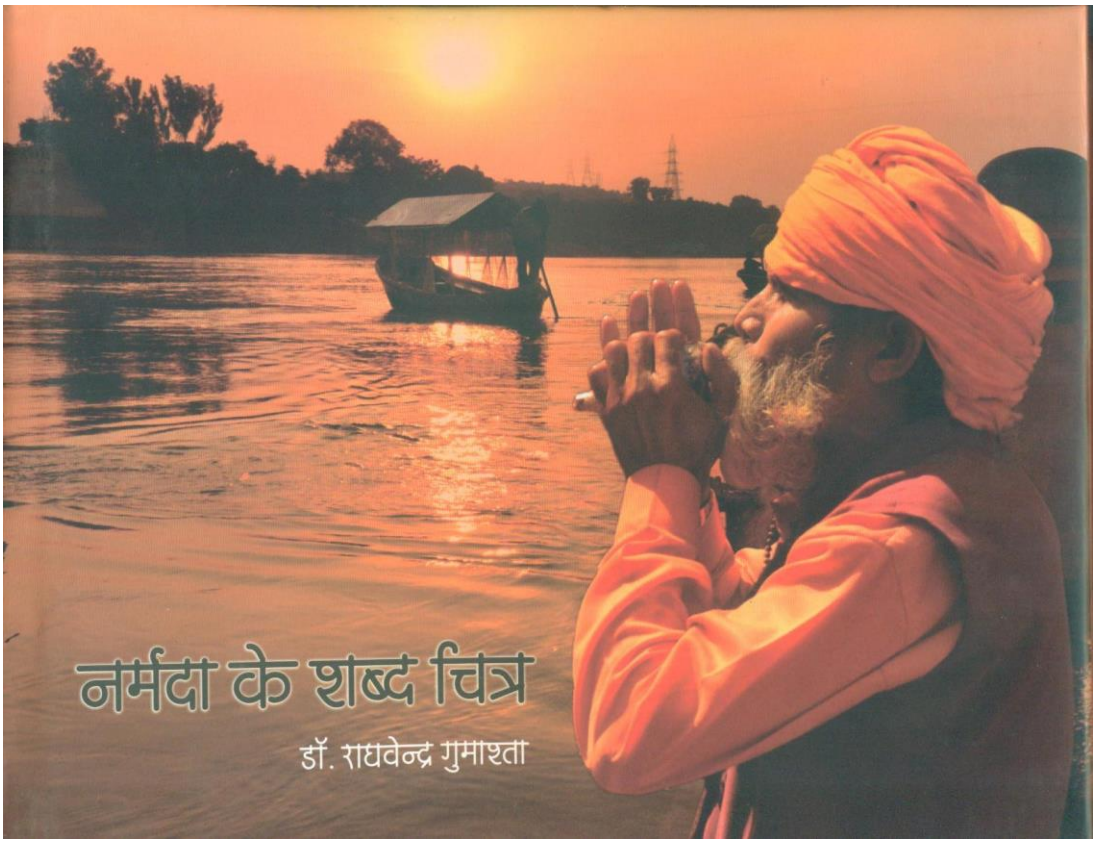

नर्मदा के शब्द चित्र

डॉ. राघवेन्द्र गुमाश्ता

नर्मदा जहाँ कहीं भी हों,
उथली हों, गहरी हों, हर जगह पूर्ण हैं।
अपूर्ण नर्मदा न तो कभी थीं, न कभी होंगी।

नर्मदा के शब्द चित्र

डॉ. राघवेन्द्र गुमाश्ता

ISBN 978-93-5268-756-9
9 789352 687589